उपसंहार

साहित्य समाज का दर्पण होता है। किसी भी भाषा के साहित्य से उस देश की प्रवृत्तियाँ, परिस्थितियाँ तथा मान्यताओं की सहज ही जानकारी प्राप्त की जा सकती है। यशपाल का समग्र साहित्य उनके मन का वह दर्पण है जिसमें उनके सभी सिद्धान्त और मान्यताएँ, आशाएँ, आकांक्षाएँ सहज ही प्रतिबिम्बित हो उठी हैं। उनका कलाकार दृष्टिकोण जीवन, समाज और उनके विभिन्न अंगों-प्रत्यगों को जिस रूप में देखता है उन्हें उसी प्रारूप में हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है। यशपाल के सिद्धान्त और मान्यताएँ उनकी अपनी हैं, जिन्हें वह समाज में क्रांति लाकर नवीन रूप देना चाहते हैं। वे अपने साहित्य की रचना यथार्थ जीवन से सामग्री लेकर जीवन के लिए करते हैं। प्रगतिशील लेखक होने के कारण उनकी अभिव्यक्ति में यथार्थ जनता की अनुभूतियों, संघर्षों, वेदनाओं और पीड़ाओं का सत्य है।

नारी और साहित्य का शाश्वत संबंध है क्योंकि साहित्य मानव जीवन से पृथक होकर पनप नहीं सकता। इसमें अलग होकर उसका ही नहीं रह सकता। जिस तरह नारी के बिना पुरूष में तथा समाज में पूर्णता नहीं आ पाती, उसी तरह साहित्य भी नारी चित्रण के बिना पूर्ण नहीं हो सकता। नारी मानव जीवन का प्रमुख पक्ष है। अत: साहित्यकार नारी की उपेक्षा कभी नहीं कर सकता। वसुधा की सजीव कविता और प्रकृति की मनोरम मूर्ति नारी अनंतकाल से ही साहित्य का प्रमुख विषय रही है। सावन की प्रथम फुहार सी शीतल, उल्लासदायिनी, आकर्षणमयी, जीवन पर स्नेह सलिल धारा बनकर बरसने वाली नारी साहित्यकारों की लेखिनी से अनेक आकृतियों में अंकित हो रही है। नारी प्रारम्भ से ही साहित्यकारों की प्रेरणादायिनी शक्ति रही है। यही नारी विभन्न कालों में विभिन्न तूलिकाओं से अनेक रंग-रेखाओं में चित्रित होती रही और प्रत्येक युग में बदलते परिवेश में उसके व्यक्तित्व के विविध चित्रों में अन्तर आता रहा है।

भारतीय वाङ्मय में उपन्यास साहित्य से पूर्व नारी के संबंध में अनेक उल्लेख मिलते हैं। प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान काल तक नारी की स्थिति में अनेक परिवर्तन हुए। उसे देवी स्वरूपा कहा गया तो 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:' कहकर उसको महत्त्व दिया गया। साथ ही 'ढोल, गंवार, शूद्र, पशु, नारी सकल ताड़ना के अधिकारी' (मानस, सुंदरकांड) भी कहा गया। 'नारी कुंड नरक का' कहकर उसकी निंदा भी की गई। आदियुग की ओर देखें तो उसके सम्मानीय, सर्वोच्च व स्वामिनी का पद प्राप्त था। वैदिक काल में भी उसकी स्थिति सम्मानीय थी, पुरूषों के समान ही थी। उसे मुक्त, स्वतंत्र और उच्च शिक्षा प्राप्त करने दी जाती थी, परन्तु उत्तर वैदिक काल में उसकी स्थिति दुर्बल होती चली गयी। उस युग में उसे अनेक अधिकार तो थे पर उसके प्रति हीन विचारों का प्रचलन होने लगा। पुत्रों को परिवार का रक्षक मानने का दृष्टिकोण हो गया। रामायण युग में भी कन्या को चिंता का कारण माना गया। महाभारत काल में उसे पातिव्रत्य धर्म की शिक्षा के अन्तर्गत पति को देवता, प्रभु, गुरू तथा सर्वस्व बताया गया। धीरे-धीरे उसका अधिकार क्षेत्र सीमित होने लगा। बौद्ध व जैन युग में उस पर अहसान के रूप में उसे सम्मान व अधिकार तो प्राप्त थे पर वे उसे भोग की वस्तु ही मानते थे। राजपूत युग में वह कामिनी रूप में रही। मुसलमानों के आगमन पर नारी दशा बहुविवाह, बाल विवाह, सती प्रथा आदि के कारण दयनीय, करूण व शोचनीय होती गयी। आधुनिक काल तक आते-आते नारी की स्थिति वैदिक काल से बिल्कुल विपरीत हो गयी। अंधविश्वास, निरक्षरता तथा अज्ञानता ने उसका जीवन बिल्कुल हेय बना दिया। धीरे-धीरे समय बदला, समय के साथ परिवेश भी। अंग्रेजों के आगमन से राजनैतिक, साथ ही साथ सामाजिक वातावरण भी बदलता गया और नारी के परम्परागत बंधन धीरे-धीरे समाप्त होने लगे। शिक्षा के प्रचार-प्रसार ने उसमें नवीन चेतना भरी। वह अपने अस्तित्व के प्रति सचेत बनी, जाग्रत हुई। अनावश्यक बंधनों को तोड़ने का प्रयास करने लगी। दयानन्द सरस्वती, राजा राममोहन राय, रवीन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गाँधी आदि समाज सुधारकों ने उसकी दशा सुधारने के प्रयत्न किए। उसे परम्परागत गौरव का स्थान प्राप्त होने लगा। वह आज की नारी के रूप में उपस्थित हुई।

19वीं शताब्दी के सभी आन्दोलनों की मुख्य समस्या नारी को समाज में सम्मानित स्थान दिलाने की थी। इन सुधारकों के अथक परिश्रम का ही यह परिणाम था कि जो नारी 60 वर्ष पूर्व सामाजिक समारोह के रूप में सती होकर आत्महत्या करने के लिए बाध्य थी, वही शताब्दी के अंतिम वर्षों में सामाजिक रंगमंच पर आकर अपनी समस्याओं पर स्वतंत्रतापूर्वक विचार व्यक्त करने लगी थी।

हिन्दी उपन्यास के प्रारम्भिक काल में उपन्यासों पर रीति काल की शृंगार परम्परा तथा फारसी परिपाटी का प्रभाव था जो नारी जीवन के चित्रण में भी मिलता है। उस युग में नारी का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं था। इस युग में अधिकाधिक उपन्यासकारों ने परम्परा प्राप्त नारी चित्र को ही अपने उपन्यासों में प्रस्तुत किया। संक्षेप में कहा जा सकता है कि उस युग की नारी कठपुतली के समान थी जिसकी डोर पुरूष के हाथ में थी। अपनी इच्छा के अनुरूप वह उसे चाहे जैसा नचा सकता था। उपन्यास के विकास काल अर्थात् प्रेमचन्द युग में नारी की स्थिति में परिवर्तन आया। प्रेमचन्द ने उसे साधारण मानवी के रूप में चित्रित किया। उसके प्रति सीमित दृष्टिकोण को त्यागकर उसके लिए व्यापक भावभूमि का सृजन किया। उसके जीवन की विविध समस्याओं को अनुभव कर उन्हें अभिव्यक्त किया, वे पग-पग पर लांछित नारी जाति के जबरदस्त अधिवक्ता थे। इस युग में नारी के आदर्शों के साथ-साथ नारी शिक्षा, स्वतंत्रता, आत्मसम्मान की भावना, समान अधिकार, घर-बाहर की समस्याएँ आदि संबंधित प्रश्नों को प्रमुखता दी गई। उसे परिवार और समाज के कार्यों हेतु प्रेरित कर व्यापक धरातल पर प्रस्तुत होने की प्रेरणा दी गई। धीरे-धीरे समाज का उसकी ओर देखने का दृष्टिकोण बदलने लगा। विविध क्षेत्रों में प्रवेश कर अपनी क्षमताओं का परिचय देकर नारी फिर एक बार अपना पूर्व परम्परागत गौरव प्राप्त करने लगी।

प्रेमचन्द युग में नारी अपने आत्मसम्मान के प्रति सजग हुई, राजनीति की ओर प्रवृत्त हुई, अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हुई, आर्थिक स्वतंत्रता के प्रति जाग्रत हुई और अपने स्वतंत्र अस्तित्व की स्थापना की ओर उसका ध्यान गया। प्रेमचंदोत्तर काल की नारी प्रगतिशील नारी है। शिखा के कारण वह जाग्रत हुई,

आर्थिक स्वावलंबन से मुक्ति की भावना उसके मन में पैदा हुई, राजनीति में प्रवेश के फलस्वरूप बाहर निकली और अपने उत्तरदायित्वों को कुशलता से निभाने की क्षमता उसमें उत्पन्न हुई। वह स्वतंत्र हुई। उसने परिवार तथा समाज में उस पर होने वाले किसी भी अत्याचार के प्रति विद्रोहात्मक स्वरूप अपनाया। नारी की समाज में सुधरती स्थिति के कारण उपन्यासकारों ने उसे नवीन प्रतिमानों के साथ चित्रित किया। उसके बाह्य रूप के चित्रण के साथ उसके अंतर्जगत में निहित भावों को भी प्रस्तुत किया जाने लगा। आज वह स्वयं संघर्ष कर परम्परागत और प्राचीन मान्यताओं को अस्वीकार कर नवीन जीवन मूल्यों की स्थापना में लगी हुई है। वह अपने सीमित धरातल का त्याग कर विश्व के विस्तृत खुले प्रांगण में उन्मुक्त रूप से विचरण की लालसा मन में संजोए जीवन पर अग्रसर है। उसमें युगानुरूप नवचेतना दिखाई देती है। सामाजिक अधिकार, आत्मसम्मान का भाव, आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास की प्रवृत्ति का उसमें समावेश हुआ है। उसने राष्ट्र, समाज और जीवन के विकास में पुरूष के कंधे से कंधा मिला कार्यरत होकर अपना महत्त्व सिद्ध कर दिया है। अब वह पुरूषों के इशारे पर चलने वाली कठपुतली मात्र नहीं है, बल्कि अपने अस्तित्व और व्यक्तित्व के प्रति सचेत, आत्मविश्वास से युक्त आत्माभिमानी नारी है जो पुरूषों के साथ बराबरी का दावा करती है। इस प्रकार नारी वैदिक काल में विदुषी, वीर गाथा काल की वीरांगना, विलास वेला की कामिनी, भक्तिकाल के सूर की प्रेम प्रतिमा, तुलसी की त्यागमयी शालिनी, रीतिकाल की विलास विधियों में झूमने वाली कोमलांगी अभिसारिका, आलोच्यकाल में आकर मानवीय रूप में अंकित होने लगी है और अब वह अबला ही नहीं सबला रूप में भी साहित्य फलक पर अवतरित हुई है।

सृष्टि के प्रारम्भ से ही नारी पुरूष की सहायक रही है। वह जब भी जीवन के संघर्ष में असफल हुआ है, सभ्यता की दौड़ में पिछड़ा है, मानसिक तनावों से ग्रस्त हुआ है, पीड़ा और अवसाद की लहरों में डूबता रहा है, नारी ही उसकी सहायक बनी है। उसे हर परिस्थिति का सामना करने की प्रेरणा देती रही

है। निर्माण की प्रक्रिया पुरूष ने नारी की सहायता से ही पूर्ण की है। वह अपना ममत्व, आत्मविश्वास, संवेदना देकर सभ्यता के विकास का प्रयास करती रही है।

साहित्य युग का प्रतिबिम्ब होता है। किसी भी देश की सामाजिक परिस्थितियों, मान्यताओं एवं मानव दृष्टिकोण का सहज ज्ञान उस देश के साहित्य से हो सकता है। यशपाल का साहित्य उनके मन का दर्पण है जिसमें उनकी अपनी मान्यताएँ, प्राचारात्मक एवं राजनैतिक दृष्टिकोण का समावेश हुआ है। वे अपनी इन मान्यताओं और सिद्धान्तों के द्वारा समाज का विकास करना चाहते हैं। उनका कहना है साहित्य का कलाकार केवल चारण बनकर सौन्दर्य, पौरूष और तृप्ति की महिमा गाकर ही अपने सामाजिक कर्त्तव्य को पूरा नहीं कर सकता। विकास और पूर्णता के सामाजिक प्रयत्न की इच्छा और उत्साह उत्पन्न करना और उस उत्साह को विवेक एवं विश्लेषण की प्रवृत्ति द्वारा सजग और सचेत रखने की भावना जगाना साहित्य के कलाकार का कार्य है। अपने इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए वे माक्र्सवादी चिंतन को अपना आधार बनाते हैं।

साहित्य समाज से अलग रहकर नहीं जी सकता, परिस्थितियों से विलग रहकर पनप नहीं सकता और युग धर्मों से बहुत दूर आकाश में उड़ानें भर कर सहानुभूतिगम्य एवं ग्राह्य नहीं हो सकता। नारी उसी समाज का अर्धांग है, अतः अनिवार्यतः सत् साहित्य में वर्णित नारी को समाजगत नारी की यथार्थावस्था से बहुत दूर नहीं माना जा सकता। यही सत्य यशपाल के नारी पात्रों केक संबंध में कहा जा सकता है।

यशपाल ने अपनी संवेदनशील प्रवृत्ति व कल्पनाशक्ति के आधार पर अत्यधिक विस्तृत भावभूमि पर नारी पात्रों का चित्रण किया है और उन्हें विविध रंगों, रूपों से सुसज्जित कर नवीन अभिव्यक्ति प्रदान की है। उन्होंने उन समस्त मान्यताओं पर तीक्ष्ण प्रहार किया जो नारी के व्यक्तित्व निर्माण तथा प्रगति में बाधक सिद्ध होते हैं। वे नारी पात्रों को अनेक अवस्थाओं में चित्रत करते हुए

नवीन मूल्यों का प्रतिपादन करते हैं। प्रेमचंद युग से नारी संबंधी बदलते प्रतिमानों को स्वीकारने के साथ ही वे उसकी सामाजिक तथा वैयक्तिक दोनों रूपों से मुक्ति चाहते हैं। नारी को मुक्त कर, वे हर दिशा में उसके स्वतंत्र तथा विकसित व्यक्तित्व की कल्पना करते हैं। उनके कथा साहित्य में युगों-युगों से पीड़ित, शोषित, प्रताड़ित, उपेक्षित रूढ़ियों के बंधन में बंधी, अंधविश्वासों में जकड़ी रहने वाली नारी का यथार्थ व सजीव चित्र प्रस्तुत है जिसका उद्देश्य मानव समाज को उसकी वास्तविक स्थिति से परिचित कराना है। इसके साथ ही उन्होंने शिक्षिता, अपने अधिकारों के प्रति सजग, जागरूक, स्वाभिमान से युक्त नारी पात्रों का सृजन कर अपने मानस में स्थित नारी को साकार रूप प्रदान किया जो आधुनिक परिस्थितियों का कुशलता व दृढ़ता से सामना कर सके। यशपाल जी ने अपने नारी पात्रों के विविध चित्रों को विभिन्न विशेषताओं से संजोकर, चित्रित कर, कुशलता का परिचय दिया। उनके जीवन के अनुभवों, व्यापक सहानुभूति, विराट कल्पनाशक्ति तथा अद्‌भुत चिंतन शक्ति ने पात्रों में विविधता उत्पन्न कर चरित्रों को अत्याकर्षक बनाया।

यशपाल प्रेमचंदोत्तर युग के प्रगतिशील कथाकार हैं। इस युग तक पहुँचते-पहुँचते नारी ने शिक्षा-दीक्षा, आचार-व्यवहार, सामाजिक तथा राजनैतिक क्षेत्र में प्रेमचंद की नारी की अपेक्षा काफी प्रगति कर ली थी। निरन्तर प्रगति के मार्ग पर अग्रसर थी। उनके लेखनकाल में नारी ने अपने जीवन को अनेक दृष्टियों से स्वाधीन बनाने की दिशा में प्रगति की। इस प्रगति की राहपर चलते हुए उसे अनेक प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। कहीं वह थक गयी, हार गयी, कहीं निराश हुई। यशपाल अपने साहित्य द्वारा उसे आगे बढ़ने को प्रोत्साहित करते रहे मानों पथ निर्देश करते हुए परम्परागत रूढ़ियों के संकीर्ण दायरे को तोड़कर बाहर आने का प्रशस्त मार्ग दिखा रहे हों। नारी के विषय में उनका दृष्टिकोण आधुनिक है। वे नारी के प्रति परम्परागत विचारधारा न रखकर आधुनिक विचारधारा रखते हैं। वे अपने नवीन विचारों द्वारा भारतीय नारी की सुप्तचेतना को जगाने का प्रयास करते हैं। उसे आगे बढ़ने को प्रोत्साहित करते हैं। उन्हें गृहस्थी,

परम्परागत रूढ़ियों आदि की संकीर्ण दायरों को तोड़कर बाहर आने का मार्ग दिखाते हैं। इसीलिए उनके नारी पात्र संकीर्ण परिधियों को तोड़कर खुली हवा में सांस लेते हैं। प्रगति के पथ पर दौड़ने वाली नारी को किन-किन प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, उसका चित्रण उनके साहित्य में मिलता है। उनके कथा साहित्य में नारी का स्वस्थ दृष्टिकोण व्यक्त है।

यशपाल साम्यवादी उपन्यासकार हैं। उनके नारी पात्र दुहरा संघर्ष करते हैं। ये नारियाँ एक ओर परम्परागत समाज एवं उसकी मान्यताओं के प्रति विद्रोह करती हैं, दूसरी ओर राजनीतिक क्षेत्र में पूँजीवादी शोषण तथा साम्राज्यवादी शासन को समाप्त करने के लिए साम्यवादी पार्टी में काम करने को तत्पर है। 'दादा कामरेड' उपन्यास की शैल बाला राजनैतिक कार्य करती है और काम संबंधी मर्यादा का प्रतिकार भी करती है। इसी उपन्यास की यशोदा भारतीय नारी की घर-बाहर की समस्या प्रस्तुत करती है। यशपाल जी चाहते हैं कि पति-पत्नी में शाासक-शासित, मालिक-गुलाम के संबंध मिटाने के लिए आवश्यक है कि नारी भी पुरूष की भाँति सार्वजनिक व्यक्तित्व का निर्माण करे। उनका मानना है कि नारी निरीह, पराधीन इसलिए है क्योंकि वह आर्थिक रूप से स्वतंत्र नहीं है। उसके लिए दासता से मुक्ति पाने का सबसे बड़ा अस्त्र आर्थिक स्वतंत्रता है। 'देशद्रोही' उपन्यास में संकीर्ण मनोवृत्ति से त्रस्त चंदा के समक्ष डॉ. खन्ना नारी मुक्ति का समाधान रखता है। वह कहता है, जब तक उसे साधन जुटाने का स्वतंत्र अवसर और अधिकार नहीं, उसक प्रेम और आचार सब पुरूष का खिलौना है। तुमने अपने आपको बलिदान कर सब सहा, अब उसके प्रति विद्रोह भी करो तो क्या कर सकती हो, जब तक जीवन के संघर्ष का अपने पैरों पर खड़े होने का साधन तुम्हारे पास न हो। यशपाल का मानना है कि युगों से नारी की पराधीनता एवं दासता उसकी विवशता के कारण ही उसके व्यक्तित्व का निर्माण नहीं हो पाया है। 'देशद्रोही' की राजबीबी जो विधवा होकर विधवापन की स्थिति में बद्रीबाबू से विवाह कर लेती है और देश सेवा में लग जाती है। सामाजिक भावभूमि पर उसका चरित्र सराहनीय है। 'पार्टी कामरेड' उपन्यास की गीता

साम्यवादी दल की सदस्या है। वह घर के बंधन तोड़कर भी पार्टी का कार्य करती है। आधुनिक भारतीय नारी को दुहरी बेड़ियां तोड़नी थीं, समाज तथा साम्राज्यवादी शासन एवं पूँजीवादी व्यवस्था की। गीता पराधीनता के बंधन तोड़ने में संलग्न है। 'मनुष्य के रूप' की मनोरमा जागरूक साम्यवादी नारी है। उसी उपन्यास की सोमा का चरित्र इस स्थिति का द्योतक है कि भारतीय नारी सब बंधनों को तोड़कर उच्चतम शिखर पर पहुँच सकती है। 'मेरी तेरी उसकी बात' की नारी उषा भी अपना जीवन राजनैतिक कार्यों में लगा देती है। उषा का चरित्र राजनैतिक भूमिका में विशेष रूप से निखरा है।

यशपाल के नारी पात्रों को कथा में सहयोग की दृष्टि से देखने पर ज्ञात होता है कि उनके प्रमुख पात्र जो पूरे कथा सूत्र की शक्ति हैं लेखक की वैचारिकता तथा उसकी चरित्र चित्रण की क्षमता को उद्घाटित करते हैं। ये पात्र आकर्षक तो हैं ही, परन्तु कुछ गौण पात्र भी अल्प समय के लिए आकर अमिट प्रभाव डालते हैं। शैल, यशोदा, चंदा, राजदुलारी, गीता, सोमा, मनोरमा, तारा, कनक, दिव्या, अमिता, विनी सभी पात्र अभिव्यक्ति क्षमता को स्पष्ट करने में सहायता करते हैं। इनमें शैल, राज, चंदा, गीता, सोमा, मनोरमा, तारा, कनक, उषा आदि ऐसे पात्र हैं जो संघर्ष करते हैं, समाज की घातक मान्यताओं का विरोध करते हैं। समाज के परम्परागत आदर्शों की वेदी पर अपने व्यक्तित्व को स्वाहा नहीं होने देते। ये नारी पात्र नितान्त आधुनिक प्रवृत्ति के प्रतीक हैं जो निरन्तर संघर्ष करते हुए हर विरोध के बावजूद प्रगति के पथ पर अग्रसर हैं। गौण नारी पात्र नैनसी, फ्लोरा, नर्गिस, शीला, सीता, मर्सी, उर्मिला, बंती, सीरा, रत्नप्रभा, महारानी नंदा, दासी हिता, जैनी, हैना, मायाघोष, चित्रा, गौरी, इंशा आदि ने किसी न किसी प्रकार नवीन घटनाओं व वातावरण की सृष्टि कर प्रमुख पात्रों के चरित्रोघाटन का कार्य किया जिसमें उन्हें पूर्णत: सफलता प्राप्त हुई। साथ ही इन पात्रों के द्वारा भी लेखक ने नारी जीवन से संबंधित अनेक समस्याओं का चित्रण किया है। इन्हीं के माध्यम से लेखक ने अन्य पात्रों के बाह्य व आन्तरिक रूप को व्यक्त होने का अवसर प्रदान किया। अत: इन पात्रों का भी अपना महत्त्व

है। इस प्रकार ये सभी नारी पात्र मिल-जुलकर मध्यवर्गीय नारी जीवन के साथ-साथ समाज में उसकी स्थिति, उसकी समस्याओं आदि को भी उद्‌घाटित करते हैं। आधुनिक प्रवृत्ति के प्रतीक ये नारी पात्र आद्यन्त क्रियाशील रहते हैं। अपने कार्यों द्वारा समाज को चुनौती देती हुई ये नारियाँ अपने मार्ग पर दृढ़ रहती हैं। आत्मनिर्भरता उनके व्यक्तित्व का गुण है, वे स्वावलंबी हैं। प्रगति के पथ पर अग्रसर रहकर ये ऐसे कार्य करती हैं जिनके सामने समाज स्वयं नतमस्तक होता है। ये सभी नरियाँ सामाजिक रीति-रिवाजों, अंधविश्वासों और रूढ़िवादी मान्यताओं के विपरीत अपने कर्त्तव्य पथ पर डटी रहतीं हैं। उनकी क्रियाशीलता ही उनके सशक्त व्यक्तित्व का प्रमाण है। ये नारियाँ जीवन की विकट से विकट परिस्थिति का सामना करती हैं, हताश नहीं हैं। उनका साहस ही उनके जीवन की परिस्थितियों को परिवर्तित करने में सहायक बनता है।

यशपाल ने नारी के पारिवारिक परिवेश के चित्रों की भी प्रस्तुति की है क्योंकि नारी ही परिवार का प्रमुख आधार है। माँ के रूप में नारी ममतामयी, त्यागमयी, वात्सल्यमयी है। माँ हमेशा अपनी संतान का हित चाहती है। उसे सच्चरित्र बनाना चाहती है। अपनी संतान के लिए उसे चाहे कष्ट उठाने पड़े या आत्मत्याग करना पड़े, वह हमेशा सहर्ष प्रस्तुत रहती है। उषा के रूप में एक वह भारतीय नारी प्रस्तुत हुई है जो माँ के रूप में अपने प्यार का बलिदान पुत्र की कल्याण कामना के लिए कर देती है। दिव्या विवश माँ है। मेनका अपनी बेटी का हित चाहते हुए उसे स्वतंत्र आत्मनिर्भर जीवन अपनाने की सलाह देती है। यशपाल ने माँ के शाश्वत रूप के सभी पक्ष चित्रित किए हैं। नारी के अन्य रूप पुत्री, बहन, पत्नी, ननद, भाभी, पुत्रवधू, सपत्नी आदि रूप भी यशपाल के उपन्यासों में मिलते हैं। पत्नी के रूप में ये नारियाँ कहीं पतिव्रता हैं, त्यागमयी हैं तो कहीं पूर्णतः विद्रोही। पत्नी के परम्परागत रूप में वह अधीन भूमिका को स्वीकार करते हुए पति के लिए अपने व्यक्तित्व को मिटाना नहीं चाहती। कनक नारी स्वातंत्र्य की एक सजग जागरूक चेतना का प्रतीक है। वह आधुनिक पत्नी है। अपने व्यक्तित्व के प्रति सजग तारा, मनोरमा, उषा आदि शोषण और

अत्याचारों के प्रति आक्रोश प्रकट कर, बंधनों को तोड़, कुंठाओं, वर्जनाओं तथा पति से विद्रोह के कारण अन्य पुरूष से संबंध जोड़ती हैं।

नारी के व्यक्तित्व निर्माण में समाज का भी महत्त्वपूर्ण योगदान है, अत: सामाजिक रूप से भी नारी के विविध रूपों की विवेचना यशपाल द्वारा की गई है। नारी प्रेमिका रूप में हमेशा चर्चित रही है। शैल जो प्रेम द्वारा अपने जीवन का विस्तार चाहती है, कितने ही पुरूषों से प्रेम संबंध जोड़ने के बाद हरीश को अपने वास्तविक प्रेमी के रूप में अपनाती है। इन प्रेमिकाओं के प्रेम में कहीं सिर्फ मित्रता सहारा लेने की आवश्यकता निभाई जाती है तो कहीं प्रेमपात्र से विवाह की कामना है। विवाह के बाद यदि प्रेमी पति का प्रेम समाप्त हो जाता है तो उसे छोड़ अन्य पुरूष से प्रेम करने का इनमें साहस है। 'मेरी तेरी उसकी बात' की माया जैसी प्रेमिका भी है जो पति और प्रेमी मित्र दोनों का संतुलन बनाये रखना चाहती है।

यशपाल के नारी पात्र आधुनिक नारी पात्र हैं जो वर्ग संघर्ष की चेतना के संदर्भ में चित्रित हुए हैं। ये नितान्त आधुनिक प्रवृत्ति के नारी पात्र जीवन के विकास में बाधक अंधविश्वास, रूढ़िवाद, जड़ परम्पराओं का विरोध करते हैं। ऐसे थोथे आदर्शों और नैतिक, सामाजिक धारणाओं का विरोध करते हैं। विपरीत परिस्थितियों से जूझते यह नारी पात्र निरन्तर अपने निर्धारित मार्ग पर अग्रसर रहते हैं। उनकी क्रियाशीलता ही उनके सशक्त आधुनिक व्यक्तित्व का प्रमाण है। ये नारी पात्र चाहे उच्च वर्ग से संबंधित हों परन्तु जागरूक नारी पात्र हैं। शैल, चंदा, सोमा, दिव्या, उषा, यशोदा, कनक, तारा, राज आदि सभी नारियाँ संघर्ष करती हैं। स्वतंत्र आत्मचिंतन द्वारा समाज की मिथ्या मान्यताओं, मर्यादाओं का उल्लंघन करती हैं। चंदा जो मध्यवर्गीय संस्कारों से ग्रस्त भारतीय नारी है, वह साहस बटोरकर अपने लिए नया मार्ग बनाने की कोशिश करती है। उसका साहस और संघर्ष नारी स्वातंत्र्य को नई दिशा की ओर संकेत करते हैं। यशपाल की नारी परिस्थितियों से हताश होने वाली नहीं, बल्कि दृढ़तापूर्वक साहस से उनका सामना करने वाली नारी है।

यशपाल के नारी पात्र जहाँ अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हैं वहीं अपने कर्त्तव्यों के प्रति भी उनमें निष्ठा है। चाहे देश के लिए, चाहे परिवार के लिए यह नारियाँ अपने कर्त्तव्य से पीछे नहीं हटीं। गीता पार्टी और देश को महत्त्व देते हुए अपने कर्त्तव्य का परिचय देती है। उषा जहाँ राष्ट्रीय कर्त्तव्यों को निभाने में अपने एकमात्र पुत्र का वात्सल्य एवं मोह नहीं रखती, वहीं एक माँ के रूप में मातृत्व के लिये अपने प्रेम को न्यौछावर कर देती है। पुत्र के प्रति अपना कर्त्तव्य निभाते हुए अपने पुत्र के भविष्य के लिए अपने प्रेम को न्यौछावर कर देती है।

वैचारिक दृष्टि से प्रबुद्ध यह नारी पात्र अपने प्रत्येक कार्य द्वारा समाज को चुनौती देते हैं। हरीश के अवैध गर्भ को धारण कर शैल अपने आपको लज्जित, अपमानित या कलंकिनी नहीं समझती। राज आत्महनन के स्थान पर आत्मोत्थान को महत्त्व देते हुए अपने मृत माने जा चुके पति के लौटने पर उन्हें आश्रय देने में असमर्थता जताती है। मनोरमा, कनक अपनी गलती का अहसास होने पर पति को तलाक देकर उससे मुक्ति पाती हैं, जीवन भर रोती नहीं रहतीं। तारा के यंत्रणामय जीवन ने बहुत कुछ सहा परन्तु वह हर परिस्थिति का जीवट से संघर्ष करती है। बौद्धिक रूप से कभी कहीं नहीं हारती। अपनी चारित्रिक दृढ़ता के बल पर जीवन में ऊँचे उठती है। आत्मसम्मान के प्रति सचेत नारी की भाँति उषा पुरूष के एकाधिकार और अहंकार के विरूद्ध विद्रोह करती है।

यशपाल के समय में नारी अपने जीवन को अनेक दृष्टियों से स्वाधीन बनाने की दिशा में प्रगति की ओर अग्रसर हो रही थी। उनके साहित्य में नारी जीवन के जो विभिन्न पहलू चित्रित हुए, उनके द्वारा नारी जीवन की विभिन्न स्थितियों पर प्रकाश पड़ता हैं, जिन्हें निम्नानुसार दर्शाया जा सकता है –

यशपाल ने विवाह संस्था को परोक्ष रूप से नकारने का प्रयत्न किया है। उनके उपन्यासों में स्त्री की जो वैवाहिक स्थिति दर्शायी गई है उनमें बाल-विवाह, बट्टा प्रथा, अनमेल विवाह, बहुविवाह, प्रेम विवाह तथा अन्तर्जातीय विवाह प्रमुख हैं। दहेज समस्या को भी यशपाल ने स्पर्श किया है।

'मनुष्य के रूप' में सोमा का बाल-विवाह किया जाता है जिसका दुष्परिणाम यह होता है कि वह बाल विधवा हो जाती है और विधवा के पुनर्विवाह की प्रथा न होने के कारण दर-दर की ठोकरें खाती है। सोमा को बाल्यावस्था में ही उसके पिता ने विक्रय कर दिया था और उसकी जेठानियाँ बट्टे में आई थीं इसलिए वह सुखी थीं और सोमा के साथ परिवार के सदस्य दुर्व्यवहार करते थे।

'झूठा सच' की तारा का विवाह दुहाजू से होता है। मिसेज अगरवाला का विवाह भी दुहाजू से होता है। यशपाल ने तारा का विवाह उसके माता-पिता की आर्थिक परिस्थिति अच्छी नहीं होने के कारण दुहाजू से करवाया।

बहु-विवाह की समस्या सामंती व्यवस्था में 'अप्सरा के शाप' में इंगित की गई है। उपरोक्त समस्याएँ विशेषकर प्रेमचंद युग की समस्याएँ हैं और यशपाल के समय तक काफी गौण हो गईं थीं, अतः यशपाल ने भी उन्हें केवल इंगित मात्र किया है।

यशपाल ने प्रेम-विवाह के बार में भी बताया है। 'दादा कामरेड' की शैल प्रेम करती है किन्तु विवाह नहीं करती। विवाह को बंधन मानती है। यशपाल प्रेम को दो रूपों में देखते हैं - एक तो जीवन में परस्पर संतुष्टि की कामना तथा दूसरा, आश्रय की भावना के रूप में।

जीवन में परस्पर संतुष्टि की कामना करते यशपाल 'दादा कामरेड' में नैतिकता की सीमाओं को लांघ गये हैं।

'मुनष्य के रूप' की सोमा आश्रय की चाह की पूर्ति के लिए अपने प्रेम के रंग बदलती रहती है।

जहाँ पर भी प्रेम जीवन के अंतरतम आवश्यकता की पूर्ति नहीं करता या जीवन में बाधा स्वरूप दिखाई देता है, यशपाल ऐसे प्रेम को त्याज्य समझते हैं।

जाति-प्रथा को समाप्त करने तथा अन्तर्जातीय विवाहों को प्रोत्साहित करने में यशपाल ने बदलते हुए समय का साथ दिया है। अपने ऐतिहासिक उपन्यास

'दिव्या' में उन्होंने बताया है कि एक ब्राह्मण पुत्री दिव्या दास पुत्र पृथुसेन से विवाह नहीं कर सकती, इस कारण दिव्या को दर-दर भटकना पड़ता है। लेकिन 'मनुष्य के रूप' में आधुनिक युग में वह हिन्दू लड़की मनोरमा का विवाह पारसी युवक सुतलीवाला से करवाते हैं।

'मेरी तेरी उसकी बात' में ईसाई लड़की उषा का विवाह हिन्दू लड़के अमर के साथ होता है।

इसके अतिरिक्त यशपाल ने विवाह पूर्व एवं विवाहोत्तर प्रेम द्वारा उत्पन्न होने वाली समस्याओं को सशक्त रूप से उठाया। विवाह के पश्चात् अगर पति या पत्नी किसी अन्य स्त्री या पुरूष से प्रेम संबंध जोड़ लेते हैं तो ऐसी अवस्था में भी नारी ही दु:खी होती है। यशपाल ने आधुनिक युग की गम्भीर समस्याओं को अपने उपन्यासों में उठाया है।

यशपाल के उपन्यासों में विवाह के अतिरिक्त कुछ अन्य पारिवारिक स्थितियों का भी सजीव चित्रण किया गया है। इनमें संयुक्त परिवार, परिवार विघटन, कुमारी माता, परित्यकता एवं अपहृत नारियों के साथ-साथ विधवा स्त्री की भी स्थिति बताई गई है।

संयुक्त परिवार पर जो यशपाल ने चोट की है वह आज के सामाजिक परिवेश में शत-प्रतिशत ठीक है।

कुमारी माता को हमारा समाज आज भी नहीं अपनाता। कुमारी माता के विषय में यशपाल का दृष्टिकोण आज भी समाज के प्रत्येक वर्ग में शत-प्रतिशत मान्य है। शैल को इस कारण घर छोड़ना पड़ा और दिव्या को असीम मुसीबतें झेलनी पड़ीं।

'झूठा सच' के द्वारा यशपाल ने परित्यकता नारियों की दशा की ओर भी ध्यान खींचा है। देश-विभाजन के समय स्वजनों से बिछुड़ जाने वाली बंती बाद में जब अपने परिवार वालों को ढूँढकर घर पहुँचती है तो न केवल परिवार वाले उसको ठुकरा देते हैं बल्कि उसे उसके बच्चे को भी उठाने नहीं देते। अंतत: बंती

द्वारा पर सर पटक-पटक कर जान दे देती है और तब वही परिवार वाले उसके निर्जीव शरीर को सौभाग्य चिन्ह् स्वरूप लाल कपड़े से ढक देते हैं। हमारे समाज की यह विडम्बना है कि विषम परिस्थितियों में फँसने वाली नारी को सहानुभूति से अपनाने के बजाय अधिकांश मामलों में आज भी ठुकरा दिया जाता है। इस स्थिति की ओर इंगित करना एक सराहनीय प्रयत्न यशपाल ने किया है।

एक अन्य प्रमुख स्थिति जिसकी ओर यशपाल ने ध्यान दिलाया है वह विधवा स्त्रियों की स्थिति है। उन्होंने विधवा स्त्रियों के लिए दो रास्ते सुझाये हैं - प्रथम, पुनर्विवाह एवं द्वितीय, अपने पैरों पर खड़े होने का प्रयत्न। दोनों समाधानों में भी एक स्पष्ट सीमा रेखा यशपाल ने खींच दी है। उनके विचार से जो विधवा स्त्री संतानहीन है उसका पुनर्विवाह ही उपयुक्त समाधान है। दूसरी ओर संतान वाली विधवा स्त्री यदि अपने पैरों पर खड़ा होने का प्रयत्न करे तो शायद यही सर्वोत्तम हल है। 'देशद्रोही' की राज प्रथम श्रेणी में एवं 'मेरी तेरी उसकी बात' की उषा और गौरी द्वितीय श्रेणी में आती हैं। आज भी यही आदर्श समाधान दिखाई देते हैं।

शिक्षा का अभाव तथा आर्थिक परतंत्रता नारी जीवन की दो मुख्य दुर्बलताएँ हैं जिन्होंने अनेक समस्याओं को जन्म दिया है। वास्तव में नारी शिक्षा आर्थिक स्वतंत्रता का आधार है। यशपाल की नायिकाएँ सोमा को छोड़कर सभी शिक्षित हैं। 'दादा कामरेड' की शैल, 'पार्टी कामरेड' की गीता, 'मनुष्य के रूप' की मनोरमा, 'मेरी तेरी उसकी बात' की उषा सभी उच्च शिक्षित नारियाँ हैं। यद्यपि इनमें से कोई भी धनोपार्जन नहीं करती परन्तु उनके सामने कोई आर्थिक समस्या भी नहीं है। 'झूठा सच' की तारा, कनक तथा डॉ. श्यामा अपनी शिक्षा का पूर्ण उपयोग करते हुए आर्थिक रूप से स्वतंत्र नहीं हैं, अत: यशपाल ने इनको दबा-दबा सा दिखाया है। सोमा जैसी अशिक्षित नारी जिसके लिए आर्थिक स्वतंत्रता मात्र कल्पना ही हो सकती है, अपने निर्वाह के लिए जीवन भर एक के बाद दूसरे पुरूष का आश्रय खोजती रही।

मार्क्सवाद में नारी के शोषण का मुख्य कारण उसकी आर्थिक परतंत्रता है। यशपाल के दृष्टिकोण के अनुसार नारी की वैयक्तिक स्वतंत्रता भी आर्थिक

स्वतंत्रता पर आधारित है। अत: वे चाहते हैं कि नारी आर्थिक रूप से पूर्ण रूपेण स्वतंत्र हो जिससे समाज में उसका सम्मान हो, कोई उसे क्रय-विक्रय की वस्तु न बना पाये अथवा कोई उसे वेश्या जैसा घृणित कार्य करने के लिए बाध्य न करे अथवा नारी को अपने किसी व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए पुरूष एक 'वस्तु' की भाँति व्यवहार में न ला सके।

समाज में स्त्रियों की एक स्थिति वेश्यावृत्ति के रूप में भी विद्यमान है। यशपाल ने 'दिव्या' में वेश्यावृत्ति का कारण आर्थिक ही बताया है। दिव्या स्वतंत्र रूप को प्राप्त करने के लिए वेश्यावृत्ति अपनाना चाहती है।

'क्यों फँसे' में वेश्यावृत्ति को कालगर्ल के रूप में दिखाया गया है। यहाँ भी अधिकतर मामलों में आर्थिक विपन्नता ही वेश्यावृत्ति अपनाने का कारण है। यद्यपि वेश्यावृत्ति के अनेक कारण हो सकते हैं परन्तु यशपाल ने इस समस्या का मूल कारण नारी शोषण एवं आर्थिक ही दर्शाया है।

नारी जीवन की एक अन्य सामाजिक स्थिति जिसकी ओर यशपाल ने ध्यान दिलाया है वह है धार्मिक शोषण। वास्तव में धर्म के नाम पर नारी का शोषण प्रत्येक समाज में होता रहा है और यह सभ्यता के लिए एक कलंक है। यद्यपि कोई धर्म नारी शोषण की आज्ञा नहीं देता परन्तु धर्म के ठेकेदारों ने धर्म की मान्यताओं को विकृत करके निजी स्वार्थ के लिए नारी शोषण के विभिन्न मार्ग निकाल लिये हैं। नारी शोषण के असंख्य रूप जिनका मुख्य आधार धर्म है, आज भी दिखाई देते हैं।

यशपाल धर्म की मान्यता में विश्वास नहीं करते, अत: दिव्या के रूप में एक सताई हुई नारी को प्रस्तुत करते हुए उन्होंने बौद्ध धर्म पर उस समय एक करारी चोट की, जब उन्होंने बौद्ध स्थविर के मुँह से आश्रय न देने की बात कहलवाई है। यदि दिव्या को बौद्ध धर्म के दीक्षित कर लिया जाता तो वह वेश्या बनने की बात ही नहीं सोचती और बाद में इतनी अपमानित भी नहीं होती।

यशपाल ने राजनीति में भाग लेने वाली स्त्रियों की स्थिति का भी वर्णन किया है। यदि कोई स्त्री राजनीति में भाग लेती है तो उसे घर के बाहर काफी

समय देना पड़ता है और बहुत लोगों से मिलना पड़ता है। ऐसे में परिवार वाले अथवा अन्य लोग उसके चरित्र पर उँगलियाँ उठाने लगते हैं। इसके अतिरिक्त यदि परिवार वालों की सहानुभूति किसी अन्य राजनैतिक दल के साथ है तब स्त्री को घर में बनने वाले क्लेश का भी मुकाबला करना पड़ता है और बहुत बार पारिवारिक जीवन को टूटने से बचाने के लिए अपनी भावनाओं को कुचलना पड़ता है। यदि वह ऐसा नहीं करती तो उसे परिवार भी छोड़ना पड़ सकता है, जैसे 'दादा कामरेड' की शैल के साथ हुआ। कभी-कभी राजनैतिक दल भी महिलाओं के नारी सुलभ आकर्षण का लाभ उठाने के लिए उनसे पार्टी के इस प्रकार के काम करवाते हैं जिससे पार्टी को लाभ हो। भले ही नारी को व्यंग्य और क्लेश का सामना करना पड़े। 'पार्टी कामरेड' की गीता के माध्यम से जब पार्टी ने अखबार बेचने का या पार्टी के लिए चंदा इकट्ठा करने का कार्य कराया तो उसके पीछे भी उक्त भावना ही थी। राजनीति में कार्य करने वाली महिलाओं के आगे एक समस्या बदनामी और चारित्रिक असुरक्षा की भी आती है।

यशपाल के लगभग सभी नारी पात्र अपने राजनीतिक एवं पारिवारिक जीवन में समुचित तारतम्य स्थापित नहीं कर पाते और उन्हें इसके दुखद परिणाम भुगतने पड़ते हैं।

हिन्दी उपन्यास साहित्य को यशपाल का प्रदेय –

रवीन्द्रनाथ और प्रेमचन्द जैसे साहित्यकारों ने भारतीय साहित्य में यथार्थवादी धारा की नींव डाली है, लेकिन उसके पश्चात् बहुत से लेखकों ने यथार्थवाद को बनाकर रखना चाहा। साहित्य क्षेत्र में इस परम्परा को कायम रखने का श्रेय यशपाल को प्राप्त है।

यशपाल प्रगतिशील व्यक्तित्व से परिपूर्ण व्यक्ति हैं। उनकी साहित्य के संबंध में एक निश्चित धारणा रही है और उसी आधार पर वे प्राचीन एवं नवीन साहित्य को परखकर अपना निर्णय देते हैं। यशपाल साहित्य को स्वान्तःसुखाय नहीं मानते। उन्होंने अपने साहित्य / उपन्यासों द्वारा निम्नवर्गीय जनता के हितों का

समर्थन किया है। यशपाल जी ने साहित्य में श्रेणी-संघर्ष की प्रवृत्ति को अनिवार्य माना है।

यशपाल के लेखन की प्रमुख विधा उपन्यास है, लेकिन अपने लेखन की शुरूआत उन्होंने कहानियों से ही की। उनकी कहानियाँ अपने समय की राजनीति से उस रूप में आक्रांत नहीं हैं, जैसे उनके उपन्यास। नई कहानी के दौर में स्त्री की देह और मन के कृत्रिम विभाजन के विरूद्ध एक सम्पूर्ण स्त्री की जिस छवि पर जोर दिया गया, उसकी वास्तविक शुरूआत यशपाल से ही होती है। आज की कहानी के सोच की जो दिशा है, उसमें यशपाल की कितनी ही कहानियाँ बतौर खाद इस्तेमाल हुई हैं। वर्तमान और आगत कथा-परिदृश्य की संभावनाओं की दृष्टि से उनकी सार्थकता असंदिग्ध है।

जो और जैसी दुनिया बनाने के लिए यशपाल राजनीति से साहित्य की ओर आये थे, उसका नक्शा उनके आगे शुरू से बहुत कुछ स्पष्ट था। उन्होंने किसी युटोपिया की जगह व्यवस्था की वास्तविक उपलब्धियों को ही अपना आधार बनाया था। यशपाल की वैचारिक यात्रा में यह सूत्र शुरू से अंत तक सक्रिय दिखाई देता है कि जनता का व्यापक सहयोग और सक्रिय भागीदारी ही किसी राष्ट्र के निर्माण और विकास के मुख्य कारक हैं। यशपाल हर जगह जनता के व्यापक हितों के समर्थक और संरक्षक लेखक हैं। अपनी पत्रकारिता और लेखन-कर्म को जब यशपाल 'बुलेट की जगह बुलेटिन' के रूप में परिभाषित करते हैं तो एक तरह से वे अपने रचनात्मक सरोकारों पर ही टिप्पणी कर रहे होते हैं।

यशपाल का सबसे बड़ी विशेषता है - अनुभव क्षेत्र का विस्तार। उनकी दृष्टि केवल वर्तमान पर ही नहीं टिकी रही बल्कि उन्होंने अतीत के कोने में भी झाँका है और इतिहास को नये दृष्टिकोण से देखकर उसकी उचित व्याख्या भी की है, जैसे 'दिव्या' को भिन्न-भिन्न सुन्दर कहानियों से जोड़कर उसे सजीव कर दिया है।

यशपाल ने यथार्थवादी उपन्यासों में अपना एक सुनिश्चित स्थान प्राप्त कर लिया है। भारतीय मध्यवर्ग की आर्थिक और नैतिक असंगतियों का अत्यंत मार्मिक चित्रण उनके उपन्यास जगत में उपलब्ध है। भाव, भाषा, कथावस्तु में सदैव सजग रहकर वे अपनी रचनात्मक लेखनी चलाते ही रहे। एक कलाकार के रूप में वह

ईमानदार तथा सजग थे। किसी भी मान-मर्यादा के प्रलोभन से उन्होंने अपनी विचारधारा को नष्ट नहीं होने दिया। वैचारिक मतभेदों के उपरान्त भी उनकी ख्याति सर्वप्रशस्त थी।

यशपाल जी ने जिस वक्त साहित्य रचना की शुरूआत की उस समय देश में स्वाधीनता संग्राम चल रहा था लेकिन उसी के बीच में एक चेतना उभर रही थी कि आजादी तो चाहिए, परन्तु 'आजादी किसके लिए?' इसी बीच आजादी की माँग ने जीवन के अन्य क्षेत्रों में पदार्पण किया। सभी समकालीन लेखकों मेकं से केवल यशपाल में यह चेतना सबसे अधिक सबल थी कि देश की आजादी के साथ ही साथ नारी को भी 'मुक्ति' मिले। इसलिए उनके साहित्य में नारी की स्थिति पर विशेष जोर दिया गया है। उनकी प्रायः सभी रचनाओं में स्त्री-पुरूष संबंधों पर प्रकाश डाला गया है। भारतवर्ष की हजारों समस्याएँ जो आज विवाद का विषय बन गई हैं उन सबको उन्होंने बड़े ही विचारपूर्वक अपने उपन्यासों में उभारा है।

यशपाल के कथा साहित्य में चित्रित समस्त नारी पात्र समग्र नारी जाति को प्रेरणा देते हैं। मध्यवर्गीय नारी की सुशुप्त चेतना को जाग्रत करते हैं। उन्हें अपने अधिकारों और कर्त्तव्यों के प्रति सजग करते हैं। सदियों से चले आये बंधन स्वरूप संस्कारों से आज के युग के अनुरूप मुक्त होने की उन्हें प्रेरणा देते हैं। यशपाल जी के नवीन चेतना से सम्पन्न नारी पात्र युगों-युगों से त्रस्त नारी जाति को मुक्ति की नई दिशा दिखाते हैं।

नारी की अस्मिता, समाज में उसके संघर्ष, उसके स्वातंत्र्य, उसके प्रति होने वाले अन्याय के विरोध में जितना यशपाल जी ने लिखा है उतना शायद ही किसी ने लिखा हो। संसार का आधा भाग नारी के धड़कते हुए, धधकते हुए हृदय को इसी सशक्त कलाकार ने वाणी दी है।

यशपाल जी महान् साहित्यकार थे। यशपाल जी के साहित्य विस्तार तथा उसकी गहराई और विविधता ने हिन्दी साहित्य को परिपुष्ट कया है। उसने अपनी विकासयात्रा पर चलकर दूसरों के लिए दिशा-निर्देश का कार्य किया है। वह

कुरीतियों और अत्याचारों का चित्रण करने के उपरान्त एक नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। सामाजिक संकीर्णता के पंक्ति में से व्यक्ति को निकालकर विचार और तर्क के ठोस धरातल पर खड़ा कर वह उसे आत्मविकास करने तथा आत्मनिर्भर रहने के लिए ऐसी विकासोन्मुख गति की ओर अग्रसर करती है जहाँ उसे अंधविश्वासों और संकुचित विचारों की आँधी विचलित नहीं कर सकती।

यशपाल द्वारा वर्षों 'विप्लव' पत्र का संपादन-संचालन, समाज के शोषित, उत्पीड़ित तथा सामाजिक बदलाव के लिए संघर्षरत व्यक्तियों के प्रति रचनाओं में गहरी आत्मीयता, धार्मिक ढोंग और समाज की झूठी नैतिकताओं पर करारी चोट तथा अनेक रचनाओं के देशी-विदेशी भाषाओं में अनुवाद के माध्यम से हिन्दी उपन्यास साहित्य क्षेत्र में उनका प्रदेय सदैव स्मरणीय रहेगा।

वस्तुतः जब तक विश्व में हिन्दी साहित्य बना रहेगा इस श्रेष्ठ साहित्यकार का नाम भी अमिट रहेगा और वह अपने आलोक द्वारा हिन्दी साहित्य का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा।